प्रयोग के नये रंग हबीब के संग

डॉ. मंजुला पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, शासकीय जे.पी. वर्मा स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

बीजशब्द :– नाटक, अभिनेता, कलाकार, मंच, विकास, प्रस्तुतीकरण, रंगमंच, अभिनेत्री, नाटक, आलेख, मंचन, पर्दा इत्यादि।

हम सभी हबीब तनवीर को निर्देशक, अभिनेता एवं संगठनकर्ता के रूप में पहचानते हैं एक नाटककार के रूप में नहीं जानते क्योंकि उन्होंने कभी भी नाटक सीखकर उसे मंच में प्रस्तुतीकरण के लिए तैयार नहीं किया, उनके नाटक वस्तुतः नाट्य आलेख है जो छपने के लिए नहीं बल्कि प्रस्तुतीकरण के लिए ही बनाये गये हैं, और स्थिर न होकर प्रदर्शन के हिसाब से परिवर्तनशील भी हैं। इसलिए साहित्यकार भी उनके नाटकों को 'नाटक' के रूप में मान्यता नहीं दे पाये। वास्तव में वे रंगमंच के नाटकार थे वे जैसा नाटक प्रस्तुत करना चाहते थे वैसा नाटक आधुनिक नाटककार लिखने में असमर्थ थे, इसलिए उन्होंने स्वम् ही प्रयोग के साथ नाट्य लेखन को स्वीकार कर लिया।

हबीब तनवीर ने ब्रिटेन से लौटने के बाद जिस नाटक का मंचन किया वह संस्कृत नाटक 'मृच्छकटिकम्' था, इस नाटक को भी उन्होंने अपने हिसाब से ढालकर संगीतमय बनाया, उनका मत था कि भारतीय मंच के लिए यथार्थवादी मुहावरे से अलग कुछ ऐसे नाटक चाहिए जिसकी जड़े पारंपरिक रूप से मौजूद हो। (1) तनवीर जी ने नाटक लेखन की शुरूआत इप्टा के समय से ही प्रारंभ कर दिया था। ''शांतिदूत कामगार'' उनका लिखा हुआ पहला नाटक है जिसे उन्होंने इप्टा में मिल मजदूरों के लिए, मिलों के द्वार पर ही प्रदर्शन किया था, इसके बाद 'शतरंज के मोहरें' तथा दिल्ली से लौटने के बाद उन्होंने 'आगरा' बाजार' नाटक, नज़ीर अकबरावादी की जन्म शताब्दी पर अतहर परवेज़ के कहने पर लिखा था। (2)

इस नाटक से तनवीर जी ने एक अलग प्रकार के नाट्य लेखन का सूत्रपात किया, नाटक नजीर अकबरावादी पर था परन्तु नाटक में नजीर कहीं नहीं थे। वास्तव में नाट्यशास्त्र में उल्लेखित नाटक की विभिन्न अवस्थाएँ यहाँ उपस्थित नहीं थी साथ ही इस नाटक में कोई नायक भी नहीं था। जिसके कारण यह नाटक अधिकांश विद्वानों को अजीब लगी, परन्तु मंचन के हिसाब से यह नाटक अनूठा था। कहने का तात्पर्य यह है कि हबीब तनवीर के नाट्य लेखन के दो रूप हैं प्रथम का उत्कर्ष हम ''आगरा बाजार'' के रूप में देखते हैं जो मौलिक है और दूसरा पक्ष लोक कथाओं पर आधारित है जैसे 'हिरमा की कहानी', 'बहादुर कलारिन', 'चरणदास चोर' इत्यादि। तनवीर जी ने कुछ कहानियों को भी नाटक के रूप दिये हैं।

नज़ीर अकबरावादी के जनकवि वाले रूप को सामने लाते हुए हबीब तनवीर ने विधिवत नाटक के रूप में रंगकर्म को प्रारंभ किया। ''आगरा बाजार'' की मूल कथा है बाजार में मंदी, उचित दाम प्राप्त करने की चाह में ककड़ी वाला गीत लिखवा कर लाता है और उसके बाद उसकी ककड़ी तेजगति से बिकने लगती है। प्रस्तुतीकरण से पहले ''आगरा बाजार'' की यही कहानी थी बाद में प्रयोग करके इस कथा को सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक संदर्भों के साथ जोड़कर पूरे बाजार का रूप बनाया गया और सामान्य जीवन के हर्ष विषाद गति, उल्लास, उत्सव को संयोजित करके नाटक में जीवतंता का समावेश किया गया, जिसके संदर्भ नजीर है। नाटक प्रस्तुतीकरण की पहली युक्ति भी फकीरों का गायन जो दृश्य के बीच में था, उसके अतिरिक्त गायन नाटक को आगे बढ़ाने में भी अपनी भूमिका का निवर्हन कर रहे थे। ''ओखला'' की पहली प्रस्तुति के लिए हबीब जामिया मिलिया इस्लामिया के कुछ शिक्षित व छात्रों के साथ मिलकर तैयारी कर रहे थे तथा कुछ रिहर्सल देखने वालों को भी इसमें शामिल किया गया था। (3)

संगीत नाट्य पुरस्कार से सम्मानित होने के बाद तनवीर जी से एक बार ''आगरा बाजार'' को पुनः प्रस्तुत करने के लिए कहा गया तब उन्होंने नया थियेटर के नाम से छत्तीसगढ़ लोक अभिनेताओं को साथ लेकर इस नाटक की पुर्नप्रस्तुति की, साथ ही कथावस्तु का भी विस्तार किया। नाटक में एक तवायफ और दारोगा के चरित्र को भी दर्शाया गया जो सत्ता की निरंकुशता और भ्रष्ट रवैया को दर्शाता है। हबीब तनवीर के नाटकों की यह विशेषता

रही है कि वो चलती प्रस्तुति की अवधि में दृश्य छांट देते थे। (4) नाटक का प्रारंभ फकीरों के गान से प्रारंभ होता है जिसमें बाजार की झलक है, व्यापारी का कोई सामान नहीं बिक रहा है, भयानक मंदी है। बाजार में अनेक प्रकार के चरित्र है, धान बेचने वाला, लड्डू बेचने वाला, किताब बेचने वाला, ककडी बेचने वाला, एक उभरते कवि तो एक इर्ष्यालु कवि, तवायफ़, गाना गाने वाला युवक, पुलिस का आदमी होली खेलने वालों का दल, पतंग वाला, बाजार में सब शामिल है हिजड़े भी, बाजीगर भी, और मदारी भी यह विविध रूप बाजार का प्रभावी चित्रण प्रस्तुत करता है।

मंच को प्रभावशाली बनाए रखने के लिए तनवीर जी ने मंच सज्जा को यर्थाथवादी रखा, मंच के एक कोने में पतंगवाले की दुकान है तो दूसरे होने में कुतुब फरोश की। पतंगवाला नजीर का प्रशंसक है तो कुतुब फरोश नजीर से बैर भाव रखता है इनके बीच चलने वाले नोंक–झोंक से ही नज़ीर का व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। उपरी माले में बेनजीर का कोठा है दरोगा और बेनजार के संवाद द्वारा ही हमें सियासत का असली चेहरा दिखाई देता है। नाटक का अंत नज़ीर के आदमीनामा संदेश से होता हैं– यथा

यहाँ आदमी के जान को वारे है आदमी
और आदमी ही तेग से मारे हैं आदमी
पगडी भी आदमी की उतारे हैं आदमी
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी
और सुनके दौड़ता है : सो है वो भी आदमी

नज़ीर द्वारा लिखित ''आगरा बाजार'' तत्कालीन जीवन का यर्थाथ चित्र प्रस्तुत करती है साथ–ही–साथ मनुष्य के जीवन के उस शाश्वत रूप को दिखाती है जैसे भूख और मुफलिसी जिसका आज तक कोई हल नहीं तलाशा गया है। जीवन की मौलिक आवश्यकताओं के साथ जीवन की अनिवार्य नियति को भी यह नाटक रेखांकित करता है, और सियासी पहलुओं को भी उभरता है। बाजार के दृश्य को ज्यादा प्रमाणिक बनाने लिए नजीर ने भाषा को गढ़ा है तत्कालीन भाषा को समझने के लिए उन्होंने कई किताबों का सहारा लिया जिसमें

मिर्जा फरह तुल्ला बेग की किताब ''दिल्ली की आवाजें'' थी। (6) भाषा की इस प्रयोग प्रस्तुति से असर पड़ा और लोक प्रियता बढ़ गई। सही मायने में तनवीर का ''आगरा बाजार'' भारत के भावी रंगकर्म की धुरी थी, जो प्रस्तुति के तत्काल बाद प्रारंभ हो गई। पहली प्रस्तुति के पश्चात् की प्रस्तुतियाँ ज्यादा नाटकीय बनती चली गई। नजीर अकबरावादी की कविता कहीं तो नाटक की गति को बढ़ाती थी तो कहीं उसकी गति को अवरूद्ध करती थी। (7) लेकिन तनवीर जी के इस नाटक के लेखन व प्रस्तुतीकरण माध्यम से एक 'ठेठ देशज' शैली का प्रारंभ हुआ, जब भारतीय रंगमंच में 'निजी पहचान' का जन्म भी नहीं हुआ था। सारे नाटककार पश्चिमी शैली का अनुकरण कर रहे थे तब तनवीर जी द्वारा प्रस्तुत यह ठेठ शैली भारतीय रंगमंच में मील का पत्थर साबित हुई, (8) जो सहज और देशी जड़ों से जुड़ी थी।

''आगरा बाजार'' की एक और प्रस्तुतीकरण के बाद तनवीर जी ने जनकथा के आधार पर जनशैली को जोड़ने वाले नाटकों की रचना की। उन्हें इस तरह के आलेख की आवश्यकता थी जो उन अभिनेताओं के लिए सहज– सरल हो, इस सहज के चक्कर में उन्होंने कुछ असफल नाटक भी प्रस्तुत किये जैसे ''सूत्रधार 77'', ''इंदर लोक सभा'' नाटक प्रस्तुत किये। फिर एक बार उन्होंने विदेशी नाटक दल के लिए 'ए ब्रोकंन ब्रिज' 1995 नाटक रचा। जब दिल्ली विकास प्राधिकता के अधिकारियों ने घर खाली कराया तब उन्होंने ''डैडी का घर'', नामक नाटक लिखा और विकास की समसामयिक अवधारणा पर ''सड़क'' नाटक तैयार किया, जन नाट्य मंच के लिए 'एक औरत हितेशिया' भी थी और बी.बीसी.के लिए 'सुन बहरी' नामक नाटक लिखा। 'मेरे बाद' नाम से तनवीर जी ने गालिब की जिन्दगी पर भी एक नाटक रचा, उनका मानना था कि गालिब की जिन्दगी पर सही तरीके से किताबों में नहीं विचार किया गया है 'मेरे बाद' नाटक गालिब की जन्म शताब्दी के अवसर पर खेला गया। हबीब का मानना था कि गालिब के गलतियों पर रक्षात्मक नीति अपनायी गयी और उन पर व्यक्तिगत आघात भी किया गया था। गालिब के जीवन का अधोरचनात्मक मूल्यांकन एवं उन्हें स्वयं के संदर्भ में सही रेखांकित करने वाला लेखन दुर्लभ है। (9) गालिब को सच्चे सन्दर्भों में प्रस्तुत करने की तनवीर की यह कोशिश रंगमंच पर सफल नहीं हो सकी, क्योंकि गजल या कविता पढ़ना और उनके कार्य को दर्शक तक पहुँचना आसान काम नहीं है। 'मेरे बाद' की नाट्य मंचन की असफलता तनवीर जी ने स्वयं स्वीकार किया।

इसी तरह 'सूत्रधार 77' और इंदर लोकसभा की भी प्रस्तुति प्रयोग के नये कर्म के कारण विवादित रही। तनवीर जी ने यह स्वयं स्वीकार किया है कि ''यह ऐसी बात है कि जिसे लेकर मैने कुछ प्रयोग किये किन्तु उसमें पूरी तरह से सफल न हो सका। कुछ ऐसे प्रयोग स्थल थे जहाँ नाटक लड़खड़ा गया, शहरी व ग्रामीण अभिनेताओं के अभिनय का स्तर भिन्न होता है, विभिन्न प्रकार की संस्कृति, व्यक्तित्व, अलग–अलग विचार धाराएँ भी अलग–अलग, जो एक दूसरे के समानांतर नहीं है। अधिकतर नाटकों में देहाती परिवेश से आये कलाकार शहरी परिवेश के लोगों पर भारी पड़ गये। उनकी सहजता, सरलता, उन्मुक्तता और ओजस्विता ने सभ्रांत कुलीन अभिनेताओं को धूमिल कर दिया। मैने यह अनुभव किया कि सूत्रधार, उत्तर रामचरित, राजा चंबा और चार भाई की असफलताओं का यही कारण था। (10)

इसी तरह तनवीर जी ने ''इंदर सभा'' नामक नाटक को रंगमंच के प्रेक्षागृह से निकालकर खुले आसमान के नीचे प्रस्तुत किया। इसका मंचन ट्रक पर किया जाता था। कलाकार ट्रक पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर किया जाता था। कलाकार 20 मिनट में ट्रक को स्टेज में परिवर्तित कर लेते थे, तथा 40 मिनट का नाटक खेलकर आगे बढ़ जाते थे। अपने आप में रंगमंच के लिए यह परिवर्तन अभिनव था। वस्तुतः यह प्रस्तुति चुनाव को मद्देनजर रखकर की गई थी। तनवीर के इस कदम से उन्हें आलोचना का सामना करना पड़ा। निःसंदेह प्रच्छन्न तरीके से वो सत्ता पक्ष का समर्थन कर रहे थे, बाद में उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार भी किया– इस प्रहसन को कांग्रेस पार्टी के प्रचार के लिए तैयार किया गया था। एक माह के भीतर चांदनी चौक में इसके चालीस प्रदर्शन हुए। (11) इस प्रदर्शन ने यह साबित किया कि हमेशा रंगमंच ही नाट्य प्रस्तुतीकरण का साधन नहीं है कभी–कभी जनता के बीच भी इप्टा स्टाइल में प्रस्तुतिकरण किया जा सकता है। इस बीच 'हबीब ने ''गांव का नांव ससुराल'' का मंचन भिलाई की कार्यशाला में किया, इस प्रदर्शन में जनता लोक नाट्य शैली की शक्ति से रूबरू हुए तथा ये जानकारी हुई कि अपने अपने मूल भाषा व परंपरा से जुड़ने में सहज होकर कलाकार कला के नये आयाम स्थापित करता है। बहुत समय तक तनवीर जी लोक कथाओं से जुड़े नाटक ही करते रहे।

हबीब के नाटक का कथ्य यह बताता है कि तनवीर जी केवल उस क्षेत्र के कला रूपों का प्रयोग नहीं कर रहे थे बल्कि वे वहाँ कि विघटित होती संस्कृति और उसको

बचाने की आवश्यकता के बारे में भी समाज को बताना जरूरी समझते थे। हबीब के नाटक के कथानक की तैयारी से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके अभिनेता कथानक के विचारों के ही यांत्रिक वाचक नहीं है बल्कि अभिनेताओं को वे पूरी स्थिति से अवगत कराते है और इस स्थिति–परिस्थिति के बीच से ही नाटक अपना स्वरूप धारण करता है। उनके लिए नाटक जितना उनका है उतना ही अभिनेताओं का भी है। नाटक को पैना करने के लिए तनवीर जी पूरी निर्ममता से नाटक की छंटाई करते है। अनावश्यक कुछ भी नहीं रहने देते, उनका लघु नाटक अवधि जितना छोटा है प्रभाव उतना ही तीव्र होता है।

तनवीर जी ने (1995) में अंग्रेजी में भी एक नाटक लिखा 'ए बोकेन ब्रिज'। यह नाटक उन्होंने शिकागों एक्टर्स एंसेन्ल के लिए लिखा। यह नाटक अमेरिका में रह रहे उन अप्रवासियों के बारे में था, जिनका जीवित सम्पर्क अब अपने देश से नहीं था, केवल उनकी स्मृतियों में उनका देश था। यह नाटक उस आदमी के सपने के बारे में था जो वर्षों से अमेरिका में रह रहा था लेकिन आकांक्षा रखता था, अपने घर वापस लौटने की। क्रिप इन नाटक का नायक था जो वर्षो पहले एक बोरा नमक और दादा जी की घड़ी के साथ शहर छोड़ आया था, परन्तु हमेशा सपना देखता था कि इसके पिता उसे बुला रहे है नाटक में कुल ग्यारह दृश्य व एक पूर्वरंग था तनवीर जी ने प्रस्तुति में अपनी शैली की छाप छोड़ी। (12)

इसके बाद तनवीर जी ने दो छोटे नाटक रचे, 'डैडी का घर' और 'सुन बहरी'। डैडी का घर उनकी भोगों गयी अभिव्यक्ति थी तथा 'सुन बाहरी' कुष्ट उन्मूलन की चेतना को प्रसारित करने के लिए लिखा था। 'एक और हिपेशियों भी थी', इस नाटक को उन्होंने जननाट्य मंच के लिए नब्बे के दशक में लिखा था। इस नाटक का उद्देश्य समाज में बढ़ते कट्टरवाद के खिलाफ आवाज उठाना था। हिपेशिया एक ऐतिहासिक पात्र है, जिसे ईसाइयों के हमले का शिकार होना पड़ा था। नाटक की कथा खोजना उन्होंने दो स्तर पर की है। एक कथा कहने वाले और दूसरी उस कथा को वर्तमान संदर्भ से जोड़ने वाले। दृश्यों को जोड़ने के लिए उन्होंने गीत का सहारा लिया। (13) भाषा उर्दू व क्लिष्ट थी।

हबीब तनवीर के नाट्य प्रस्तुति की सबसे विशेष बात उनका लोक कथानक से जुड़कर लोक शैली पर आधारित नाटकों का मंचन रहा है, और भारतीय रंगमंच में उनकी उपलब्धि का यह एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। ''आगरा बाजार'' के बाद से तनवीर जी ने

लोक आधारित कई प्रस्तुतियाँ तैयार की। उन्होंने देशभर में घूम–घूम कर बहुत सारे स्थानीय कलाकारों के साथ कई शालाएँ की, तथा नाट्य की विविध शैलियों से उनका परिचय कराया। ''कुरितिया का चपरासी'', ''अर्जन का सारथी'', ''गौरा–गौरी'', ''राजा चंबा और चार भाई'', नामक नाटक उन्होंने मंचित किये। हबीब तनवीर जी ने छत्तीसगढ़ के लोक नाट्य और उनसे जुड़कर चलने वाले परंपरा, रिवाज की भी जानकारी इकठ्ठी की। पंडवानी छत्तीसगढ़ लोक नाट्रू विधा की बेहद लोकप्रिय शैली है इसके प्रसिद्ध कलाकार पूनाराम निषाद को तनवीर जी का संरक्षण था उन्होंने उनकी प्रतिभा का परिष्कार किया और 'अर्जुन का सारथी' नामक नाटक से दिल्ली में प्रस्तुति की। सी. राजगोपालाचारी के महाभारत को आधार बनाकर तथा उसमें छत्तीसगढ़ी पंडवानी का घालमेल करके उन्होंने पूनाराम निषाद के पंडवानी गायन को सम्पूर्ण महाभारत नाम से प्रस्तुत किया, तथा शैली को बेहद संप्रेषनीय और प्रभावी बनाया। (14) प्रस्तुतीकरण के ढंग में भी उन्होंने आमूल चूल परिवर्तन करके एक नयी शैली का इजाफा किया, जैसे बाण चलाना है, तो पहले देखे निशाना किधर है और देखना किधर है और इस तरह से प्रस्तुतियों से देखने वाला समझ जाए कि छाया में देखना बाण चलाना है उसी तरह तंवूरा को गढ़ा बना के ऐसे उठा लेना है जैसे गढ़ा हो या द्रोपदी चीरहरण में साड़ी को ऐसे खींचना है, घुटने टेक के पूरी ताकत से साड़ी खीचना दिखाता है। निश्चित ही यह प्रदर्शन बेहद रोचक व प्रभावूर्ण रहा। (15) 'अर्जुन का सारथी' नामक नाटक की प्रस्तुति में तनवीर जी ने ग्राम गीतों का प्रयोग किया, इन ग्रामीण गीतों में शक्कर व पार्वती जी का जिक्र होता है। प्रस्तुति के दौरान ग्रामीण महिलाएँ एक उतार–चढ़ाव के साथ गाती हुई स्टेज कवर करती है, शुद्ध रूप में यह नाटक नहीं है लेकिन तनवीर जी ने इसे नाटकीय अंदाज में प्रस्तुत करके अपनी प्रयोगशीलता का परिचय दिया, जो दर्शक को भी आकर्षित करता है। तनवीर जी के प्रस्तुति में लोक और शास्त्रीय दोनों रूपों का उपयोग किया जाता है।

प्रयोग की विफलताओं से बिना विचलित हुए पुनः नये प्रयोग के लिए तनवीर जी ने अपने आब्जरर्वेशन के काम को हमेशा गतिमान रखा। उन्होंने देखा कि 'नाचा' में दर्शक तीनों ओर से, कभी चारो ओर से देखकर प्रसन्न होते है और अपने को अधिक महत्वपूर्ण मानने वाले लोग भी मंच पर आकार आसीन हो जाते है लेकिन इसमें अभिनेताओं का अभिनय प्रभावित नहीं होता, वे तुरंत–तुरंत संवाद भी गढ़ रहे है और इंप्रोवाइजेशन भी कर रहे हैं

जनता उन्हें मंत्र मुग्ध होकर निहार रही है। अभिनेता अपने आस–पास होने वाली नकारात्मक व सकारात्मक दोनों घटनाओं को टिप्पणी की तरह दर्शक में परोस रही है सहजतापूर्वक यह प्रयोग भी सफल रहा फिर वे सूत्रधार की भूमिका में आये और कथा आगे बढ़ने लगी। 6 से 23 मार्च 1973 में छत्तीसगढ़ के रायपुर में तनवीर जी ने छत्तीसगढ़ी कलाकरों के लिए कवि शाला का आयोजन किया जिसमें छत्तीसगढ़ से 40, पांच ग्रामीण व दस शहरी युवकों ने प्रेक्षक के रूप में भाग लिया। (16) इस वर्कशॉप का उद्देश्य था कि छत्तीसगढ़ के बुनियादी लोक स्वरूप को बिना किसी छेड़छाड़ के प्रस्तुत करें, जहाँ आवश्यक हो वहां सुधार करें साथ ही वेशभूषा रूप–सज्जा प्रकाश व्यवस्था के लिए भी देशी तरीकों को ही नाटक के प्रस्तुतीकरण में हबीब तनवीर कथा कहने की हमारी पुरानी परंपरा, सहजता और उसे संप्रेषणीय बनाने के लिए मार्ग में आने वाले रूकावट को हटाने में पूरी तरह से कामयाब हुए। हरियाणा के सोनीपत में स्वांग शैली और नया थिएटर दोनों के कलाकरों के साथ एक कार्यशाला का आयोजन किया था, और प्रस्तुति के लिए उन्होंने हरियाणवी शैली के दो स्वांग (नाटक) को चुना, 'शाही लकड़हारा' और 'जानी चोर'। तनवीर जी की यह विशेषता थी कि जहां जाते थे वहां की भाषा एवं शैली को अपनाते थे। (17)

स्वांग की शैली को लखमीचंद ने भी नया रूप दिया था रूढ़ हो चुकी स्वयं कथाओं को उन्होंने गतिशील करके आधुनिक बनाया। इसी तरह उन्होंने उड़ीसा के गंजम जिसके लोक प्रिय नाट्य रूप 'प्रहलाद' को प्रदर्शन के लिए चुना। इस नाटक में मुखैटे आर्कषण का केन्द्र होते हैं। (18) नाटक संस्कृत व उड़िया में लिखा, शास्त्रीय राग पर आधारित संगीत भी ताल से लयबद्ध होती थी। प्रहलाद भक्त की कथा पर आधारित भगवान, हिरण्यकश्यपु का वध करने नरसिंह रूप लेकर पृथ्वी पर आते हैं। नाटक प्रस्तुति के समय तनवीर जी ने इसको समय–सीमा में बांध लिया और नाटक को सामयिकता से जोड़ते हुए 'हिरण्यकश्यपु' को 'तानाशाह' का रूप दे दिया और उसे वर्तमान से जोड़ दिया। हबीब तनवीर ने पारंपरिक नाट्य रूपों में शैली की दृष्टि से ही नहीं अपितु कथानक की दृष्टिकोण से भी नवीनता उत्पन्न करने की कोशिश की, ताकि जीवंतता बनी रहे।

उपसंहार– हबीब तनवीर किसी एक शैली में बंधकर रहने वालों में नहीं थे और उन्होंने किसी एक शैली में बंधकर काम भी नहीं किया। उन्होंने विभिन्न पारंपरिक शैली में

काम कर उससे निकटता बनाई। भारतीय रंग परंपरा को अपनी रंगभाषा का आधार बनाने के बावजूद पश्चिमी आधुनिक रंग युक्तियों को भी जाना। नाटक को समय सीमा में बांधना, संवाद व गति का निर्धारण, प्रकाश व ब्लाकिंग व्यवस्था आधुनिक पाश्चात्य परंपरा का भी प्रभाव रहा है। वे कोरस ग्रीक, ब्रेख्त, और शैली से बहुत प्रभावित थे। वे ब्रख्त के नाटकों को देखने जर्मनी गये और उनके प्रभाव से प्रभावित होकर एक अपनी शैली निर्मित कर रहे थे। क्योंकि वहाँ से ही उन्होंने अनुकरण किया कि हमें अपने जड़ों तक गहरे जाकर अपनी निजी शैली विकसित करनी होगी।

तनवीर जी ने अपनी रंगभाषा में दृश्य निर्माण के लिए बहुत सारी कलाओं को एक मंच पर ला दिया, जो सीधे–सीधे नाटक से नहीं जुड़े थे उसके लिए उन्होंने कथ्य में जगह बनाकर उसे नाटक का अनिवार्य अंग बनाया। चरण दास चोर में पंथी नृत्य व राऊत नृत्य, ''दुर्योधन'' में पंडवानी, ''आगरा बाजार'' में मदारी, ''गांव के नाव में'' ''देवरा देवारिन'', देख रहे है नैन में ''गेडी नृत्य'' कामदेव के सपना में'' बस्तरिहा नृत्य, इसी तरह विभिन्न प्रकार के नाटकों में उन्होंने दूसरे अन्य प्रकार के कला तत्वों का अभियोजन किया जो उनके दृश्य संरचना का अनिवार्य अंग बना और ये कलाए सीधे–सीधे जनता के सामने प्रस्तुत होती है तथा इन्हीं से नाटकों में कथ्य को परिवेश मिलता है जो दृश्य रचने की क्षमता के साथ इन कलाओं की नाटकीयता रंगमंच में एक तरह से उत्सव का वातावरण भी तैयार करती है। विरोधा भाषी दृश्यों में ही विरोधी तत्वों को आमने–सामने रखकर अर्थ को व्यंजित करना तनवीर के रंगमंच की एक प्रमुख विशेषता रही है। व्यंग्य में लिपटा हुआ हास्य हबीब के रंगमंच के लोकप्रिय होने का मुख्य कारक रहा है। उन्होंने आधुनिकता की गंभीरता को हास्य विनोद से जोड़कर भारत के ग्रामीण परिवेश की सहज जीवन शैली को यथार्थ बोध के साथ पूरी मार्मिकता से उभारा है।

संभवतः हबीब तनवीर एकमात्र ऐसे निर्देशक है जो कलाकरों के एक समूह के साथ बहुत लम्बे अर्सों तक प्रयोगशील रहे और प्रस्तुतियाँ दी। स्वयं तनवीर जी भी अभिनेता रहे लेकिन उनके निर्देशन ने भारतीय रंगमंच को अनेक बेहतरीन अभिनेता प्रदान किए। सहजता से और बिना किसी व्यवधान के कहानी कहना प्रयोगशीलता का एक नूतन पक्ष है हबीब तनवीर का रंगकर्म लगभग सात दशकों में फैला हुआ है। उनकी प्रयोगशीलता एक

गतिमान यात्रा है इसमें कभी ठहराव तो कभी गति। वे अपने जीवन के अंतिम समय तक सक्रिय रहे यहीं उनकी प्रयोजनीयता का सार्थक पक्ष है।

सन्दर्भ सूची :–

1. हबीब तनवीर – 'वेटिंग द प्लेराइट' सेमीनार अंक 32, 1962
2. हबीब तनवीर – आगरा बाजार, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली– 5, 2010
3. हबीब तनवीर – 'इस्ट मस्ट फ्लो ए लाइफ इन थिएटर' सगील थिएटर क्वाटरली इस्ट 10:11, (1996)
4. महेश आनंद (2010), आगरा बाजार, कुछ यादें नटरंग दिल्ली खण्ड 22 अंक 87: 78
5. उपेन्द्र नाथ अश्क, 1990 'आगरा बाजार' 'कुछ इंप्रेशन' छायानट अंक 52:57
6. हबीब तनवीर – 'ए लाइफ इन थियेटर' कलावर्ता वर्ष 21 अंक 103:151
7. प्रतिभा अग्रवाल, (सं) 1995:23
8. देवेन्द्र राज अंकुर अतरंग बहिरंग 139
9. देवेन्द्र राज अंकुर (1999) अनवरत रंग यात्रा के पचास साल, रंग प्रसंग, रानावि, वर्ष–2 अंक 01:19
10. भारत रत्न भार्गव (2006) रंग हबीब, रानावि, नई दिल्ली 131,
11. हबीब तनवीर (2013) मेमायर्स (उर्दू से अनुवाद महमूद फारूखी) पेंग्विन बाशिकंग नयी दिल्ली 256
12. जावद मलिक, द टेलीग्राफ 8 सितम्बर 1995 नटरंग प्रतिष्ठान
13. अनीस–आजमी, 'हबीब तनवीर एक मुख्तसर तआर्रुफ, कलावर्ता, वर्ष 1 अंक 103:138
14. हबीब तनवीर – 1996, 22
15. पूनाराम निषाद, 'साक्षात्कार' नुक्कड़ जनम खण्ड–7 अंक 26:138
16. दिनमान, 1 अप्रैल 1973
17. चरणदास चोर – 9
18. सुरेश अवस्थी (2000), 27

******